शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मालती जोशी की कहानियों में शिल्प-वैविध्य

डॉ. जगदीश चौहान
डॉ.श्रीमती मंजुला जोशी,
(विभागाध्यक्ष हिन्दी)
शा. शहीद भीमानायक स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बड़वानी, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्यकार के साहित्य को प्रभावी ढंग प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य शिल्प विधान का होता है। प्रत्येक साहित्यकार चाहे वह काव्य सृजन करें, कहानी लिखें अथवा गद्य की किसी भी। शिल्प का सम्बन्ध भाव, विचार, लक्ष्य और अनुभूति पक्ष की अपेक्षा भाषा-शैली से जुड़ता है। किसी भी रचना को प्रभावशाली बनाने में भाषा-शैली का महत योगदान होता है। कथाकार अपने अनुभव, विचार और कल्पना को मूर्त रूप प्रदान करता है। शिल्प अभिव्यक्ति का एक प्रकार है। परिस्थितियों के अनुसार शिल्प भी परिवर्तनशील है। इस परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध पत्र में मालती जोशी की कहानियों में शिल्प वैविध्य की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

डॉ.वैकुण्ठनाथ ठाकुर ने भाषा की प्रभावशीलता के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये हैं, "कहानी की भाषा को प्रभावित करने वाले स्रोत कौन-से हैं ? निश्चत ही कहानीकार की शिक्षा-दीक्षा के माध्यम से भाषा और साहित्य की सुदीर्घ परम्परा भाषा के सर्वसम्मत प्रयोग और साहित्य की सौन्दर्यमयी शैली का असर कहानी की भाषा पर होता है, किन्तु इससे भी अधिक असर उस परिवेश का होता है, उस वातावरण का होता है, जिससे प्रेरणा लेकर कहानीकार घटनाओं और पात्रों का सृजन करता है। यदि सामान्य जन जीवन से घटनाएँ और पात्र लिये गये हों, तो निश्चय ही कहानी का भाषा पर जन जीवन में प्रयुक्त भाषा का असर होगा।"1

सर्वप्रथम कहानीकार भाषा पर ध्यान देता है कि वह पात्र के वर्ग शिक्षा व व्यक्तित्व के अनुरूप हो, इसके अभाव में पात्र के साथ-साथ कहानी व कहानीकार अपना अस्तित्व खो देते हैं।

मालती जोशी ने भाषा के इस भाग का अपनी कहानियों में सदैव ध्यान रखा है। उनकी हिरोइन साँस-साँस पर पहरा बैठा, संदर्भहीन, छोटा-सा मन बड़ा सा दुःख, मैं तो शकुन हूँ, जैसी कहानियों में भाषा पात्रानुरूप हैं। 'हिनोइन' कहानी में बर्तन साफ करने वाली कहती है, "अरे वो माथुर साब भी एक नंबरी थे। बस आते जाते कभी मेरी चुटैया खींच दे कभी धोल जमा दे, कभी चिकोटी काट ले इतनी गुस्सा आती थी कि बस।"2

'संदर्भ हीन' कहानी में काम करने वाली महिला अपनी मालकिन के संबंध में कहती है कि "खसम खाके बैठी है म्हारी बाई, तो पालटी तो करे गाच। राशलीला बिगर जिंदगी कैसे बीते हो। छोरा तो भेज दी हो अम्रीका ने छोरी को भेज दी बोल्डिंग। अब अकेली कई करें बापड़ी।"3 यहाँ पर

मालती जोशी ने मालवांचल के शब्दों का बेधड़क प्रयोग किया है। पात्र के अनुकूल भाषा से जीवन्तता आ गयी है।

मालतीजी ने आवश्यकतानुसार विदेशी भाषा के शब्दो का प्रयोग भी कहानी को प्रभावी बनाने के लिये किया है। उनके द्वारा अंग्रेजी भाषा के शब्दो का प्रयोग बिलकुल अस्वाभाविक नहीं लगता। कुछ उदाहरण दृष्टव्य है -

"लीव इट टू मी। सब सम्हाल लूँगा।"4

वैसे ही आलंकारिकता गद्य की भाषा को भी शोभान्वित करती है। मालती जी ने अपनी विभिन्न कहानियों में इस आलंकारिक भाषा का प्रयोग किया है।

"यह बात वे कुछ इस अंदाज में कहती, मानो बेटा होता, तो सीधा झूले से उतरकर बाप का हाथ बाँटने पहुँच जाता है।"5

इसी प्रकार मालतीजी ने काव्यात्मक व चित्रात्मक भाषा का प्रयोग भी अपनी कहानियों में किया है, जिससे कहानी शिल्प की दृष्टि से अच्छी बन सके।

"खिड़की से छनकर आती रोशनी में मैंने देखा महारानी बेसुध होकर सो रही हैं। सोने का स्टाइल वही पुराना रजाई सिर के ऊपर तक लपेट लेंगी, पैर भले ही खुले रह जाएँ।"6

जैसे काव्य में बिम्बों और प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है, वैसे ही मालतीजी ने अपनी कहानियों में भी इनका प्रयोग कर लेखन को प्रभावी बना दिया है।

"यह तो बहुत बाद में जाना कि कुछ पौधे ऐसे होते हैं, जो सहज ही में दूसरी जगह जड़ नही पकड़ते और अपना अस्तित्व खो बैठते है।"7

कहीं-कहीं भावों की अभिव्यक्ति तथा पात्रों के व्यक्तित्व को दर्शाने के लिये व्यंग्यात्मक भाषा को भी मालती जी ने आधार बनाया है -

"फिर अंजू चलने की मुद्रा से खड़ी ही रही, तो उस चण्डी स्वरूपा ने कहा - देखो बहन, अब चाय पीकर ही जाना, नहीं तो बुढ़िया मेरे सातों पुरखों को तारकर रख देगी।"8

भाषा के साथ-साथ कहानी में संवादों की महत्ता भी कम नहीं होती। संवाद कहानी की घटना को गतिमान बनाने का कार्य करते हैं। साथ ही कहानी को रोचक, प्रभावी व सजीव बनाने में भी संवाद महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। संवाद के स्वरूप के संबंध में निबंधकार डॉ. गुलाबराय ने कहा है, "कथोपकथन या वार्तालाप पात्रों के द्वारा ही हम पात्रों के हृदयगत भावों को जान सकते हैं, यदि वार्तालाप पात्रों के चरित्र के अनुकूल न हो, तो हम चरित्र का मूल्याकंन करने में भूल कर जायेंगे। कहानी में कथोपकथन का तिहरा काम रहता है। उसके द्वारा पात्रों के चरित्र का परिचय ही नही मिलता, वरन् उसके सहारे कथानक भी अग्रसर होता है और एक उबरने वाले प्रबंध के भीतर आवश्यक सजीवता उत्पन्न हो जाती है।"9

संवादों की महत्ता के संबंध में डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा ने लिखा है, "संवाद अपने प्रकृतत्व औचित्य और व्यावहारिक रचना से ही अपने सौन्दर्य और आकर्षण को समझा देते हैं, उसमें तर्क-वितर्क, चिन्तन-मनन की उतनी अपेक्षा नही होती । .... संवाद से अन्य सभी तत्वों का सीधा संबंध होता है। संवाद जहाँ एक ओर कथा के प्रसार का मुख्य साधन होता है, वहीं चरित्र के उद्घाटन का भी, साथ ही देश काल का भी पर्याप्त बोध करा देता है।"10

संवाद के स्वरूप और उसकी महत्ता को ध्यान में रखते हुए मालतीजी ने अपनी कहानियों की संवाद-योजना का भी विशेष ध्यान रखा है। सहज स्वाभाविक व संक्षिप्त संवादों में अपने पात्रों की

विचाराभिव्यक्ति की है। कथानक को गति प्रदान करना कहानीकार का उद्देश्य होता है, इसलिए वह अपनी कहानी की संवाद योजना इसी प्रकार की रखता है । भावात्मक संवाद भी कहानी की रोचकता में अभिवृद्धि करते हैं। 'शापित शैशव' कहानी में पारूल की सौतेली माँ भावुक होकर पारूल से कहती है कि - "जायदाद का मुझे लोभ नहीं है। मुझे तो एक घर, एक जीवन-साथी की तलाश थी - वह मुझे मिल गया। साथ ही एक प्यारी-सी बीटिया भी मिल गई। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। इत्मीनान रखो, मैं तुमसे तुम्हारे पापा का प्यार भी नहीं छीनूंगी, बल्कि मैं तो अपने हिस्से का प्यार भी तुम्हें देना चाहती हूँ।"11

मालतीजी ने विषयानुरूप अपनी कहानियों में लंबे संवाद भी लिखे हैं। विषय के गांभीर्य को स्पष्ट करने के लिये ये संवाद कहानी के लिये सर्वथा उपयुक्त होते हैं। मालतीजी ने जैसे पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है, ठीक वैसे ही पात्रानुकूल संवाद भी लिखे हैं। पात्र के वर्ग, परिस्थिति, स्वभावानुसार संवाद लिख कर कहानी को प्रभावी बनाया है। नौकरानी व मालकिन के मध्य होने वाला यह संवाद पात्रानुकूल संवाद का अच्छा उदाहरण है -

"अच्छा चल पाँच मिनट सुस्ताकर चाय पी ले, नीलम ने उसे शीतल का कप पकड़ाते हुए कहा, कि तेरा भी व्रत है ?

काहे का ? तीजा का ? अरे मैं नहीं करती।

क्यों री। पहले तो खूब करती थी। शीतल ने पूछा। अब किसके लिए भूखी मरूँ, जीजीबाई ?

मतलब ?

मतलब ये अपने खसम को छोड़े बैठी है। अब ये व्रत क्यों करेगी। खसम शब्द से ही जाहिर था अम्मा खूब-खूब नाराज है बसंती से।"12

व्यंग्यात्मक संवाद कहानी को, उसके कथानक को प्रभावी व रोचकता प्रदान करने का काम करते हैं। मालतीजी ने हास्य-व्यंग्य संवादों का भी प्रयोग किया है।

"तो श्रीमानजी क्या अपने-आपको चंकी पांडे या आमीर खान की पीढ़ी का समझ रहे थे। खुद भी चालीस को छू रहे थे, पर उनका एक ही प्लस पाइंट था, और वह यह कि अब तक कुँवारे थे, और शायद इसीलिए किसी ज्योतिषी की आस लगाए बैठे थे।"13

शैली पाठक को अपने कथानक के साथ संबंध रखने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शैली ऐसी हो कि वह पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर सके। डॉ.गुलाबरायजी ने शैली के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये हैं - "अच्छी शैली में व्यक्तित्व व निर्वैयक्तित्व का मिश्रण वांछनीय है। चाहे जितना उपयोग करे, लेखक अपने व्यक्तित्व में से अपने को निकाल ही नहीं सकता। फिर भी विषय को इतना विस्तार देना चाहिए कि वह स्वयं बोलने-सा लगे।"14

मालतीजी ने अपनी कहानियों के लिये प्रसंगानुकूल तथा आवश्यकतानुसार हिन्दी की लगभग सभी शैलियों को प्रयुक्त किया है। उन्होंने विवेचन, प्रश्न शैली, संवाद शैली विवरण शैली, व्याख्यात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, वर्णन शैली, सहज शैली, पत्र शैली, स्मृतिप्रधान शैली आदि का प्रयोग किया है।

उनकी उफान, प्रतिदान, कोख का दर्प मध्यांतर, में प्रश्न शैली दिखाई देती है -

"क्या बात है अम्मा ? किसी ने कुछ ..... मेरा मतलब है, तुम्हारा अपमान किया है किसी ने ? मेरे ख्याल से उन लोगों ने क्या तुम्हारी खातिर में कुछ कमी रह गई ? लेन-देन में कुछ कसर रह गई क्या? हुआ क्या है आखिर "15

मालती जी ने प्रसंगानुकूल अपनी कहानियों 'पराजय', 'मैं तो शकुन हूँ', 'सफेद जहर', 'चोरी', 'नैहर छूटो जाय' में पत्र शैली का प्रयोग किया है।

इसी प्रकार 'सती', 'पहली बार', 'परायी बेटी का दर्द', 'अस्तित्व-बोध', 'मन धुआँ-'धुँआ आदि कहानियों में स्मृति प्रधान शैली का प्रयोग किया है -

"याद आती है गर्मियों की एक शाम। हम लोग सड़क पर नदी पहाड़ खेल रहे थे। बड़ी बहनें अपनी सिलाई - कढ़ाई लेकर बरामदे में बैठी हुई थी। तभी दरवाजे पर एक ताँगा रूका और हम लोग विश्वास ही न कर पाये। ताँगे से दीदी उतर रही थीं साथ में जीजाजी भी थे।"16

जैसे भाषा, संवाद व शैली कथानक को सजीव प्रभावी व रोचक बनाकर पाठक को अपने से जोड़कर रखते है, वैसे ही वातवारण तत्व भी कथानक में तत्कालीन परिस्थितियों का उद्‌घाटन कर कथानक को मजबूत यथार्थ बनाने में योगदान देता है। वातावरण के अंतर्गत तत्कालीन समस्त परिस्थितियाँ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक, धार्मिक समाहित रहती है। डॉ.जगन्नाथ प्रसाद शर्माजी ने वातावरण के संदर्भ में अत्यंत उपयुक्त बात कही है- "इसका संबंध कहानी के दृष्टार्थ अर्थात् प्रतिपाद्य प्रभान्विति से अधिक होता है। यह किसी एक अथवा अनेक तत्वों में योग नही देता, वरन् कहानी की समष्टि का मानस पर छायात्मक प्रभाव डालता है। अथवा स्वयं में कहानी का इष्ट बनकर अन्य तत्वों को अपने अंग रूप में स्वीकार करता है। इस तरह किसी भी कहानी को पढ़ लेने पर एक प्रकार के वातावरण का अनुभव पाठक करता है।"17

वातावरण कहानियों में चित्रित घटनाओं को स्वाभाविकता, विश्वसनीयता तथा यथार्थ आधार प्रदान करता है।

मालती जी की कहानियों में सामाजिक तथा पारिवारिक वातावरण की अधिक चित्रित हुआ है। उसके अंतर्गत सामाजिक, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, कुरीतियाँ, आचार-विचार पारिवारिक विघटन, उन पात्रों का पारस्परिक सामंजस्य व वैमनस्य आदि का चित्रण मिलता है। परिवार में मानसिक, तनाव व खिंचाव के वातावरण की सृष्टि करता यह उदाहरण -

"कुसुम ने सोचा कि शायद उसे अपने किए पर पश्चाताप हो रहा है। उसकी क्षमा-याचना का वह कोई अच्छा सा उत्तर सोच रही थी कि रमा दाँत पीसकर बोली, आग लगाकर चल दी महारानी। इसीलिए तो आई थी। अब तो कलेजे में ठंडक पड़ गई होगी। अब दोबारा कभी मेरे दरवाजे पर मत आना । अगर आओ, तो अपने भाई का मरा मुँह देखो।"18

तत्कालीन समाज में बेटी के प्रति जो हीन भावना थी, उसका चित्रण भी मालतीजी ने बहुत अच्छे ढंग से किया है। उसके जन्म को अशुभ, पालन-पोषण व विवाह को बोझ समझा जाता था।

नारी के प्रति इस प्रकार की हीन भावना पुरूष प्रधान समाज की देन है, जो हमेशा लड़के की चाह में ही रहता है। उसे अपने का उद्धारक व वंश चलाने वाला मानता है, लेकिन कभी यह विचार नही करता कि उसे जन्म देने वाली भी एक नारी ही है। पुरूष अपनी इस सोच के लिये, इस अभिलाषा की पूर्ति के लिये नारी का बलिदान कर देता है।

मालतीजी ने अपनी कहानियों में शहरी और ग्रामीण दोनों ही वातावरण का चित्रण किया है।

गाँवों में जहाँ बडे-बड़े घर होते हैं, वहीं शहरों में छोटे-छोटे कमरे ही होते हैं। गाँव में बहू बेटी को घर की मर्यादा में घूँघट निकालकर रहना पड़ता है, वहीं शहर में उनका जीवन स्वतंत्र रूप से बीतता है। मालती जी ने ग्रामीण वातावरण का सटीक चित्रण किया है - "ले-देकर एक गाँव ही रह गया है। दीपू की तो वहाँ मौज रहती है। पर मम्मी बेचारी बड़ी परेशान हो जाती है। न बिजली है, न नल, बस गर्मी में तपते रहो। किताब तो वहाँ छूती तक नहीं। गाँव की औरतों से घिरी दादी के पास बैठी रहती है। खूब आगे तक सिर ढके चुप-चुप रहने वाली यह मम्मी कितनी अजनबी सी लगती है। कितनी बेचारी सी।"19 इस प्रकार मालतीजी ने समाज के रीति-रिवाज व पारम्परिक मर्यादा पर वातावरण के प्रभाव का भी चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः मालतीजी की कहानियाँ शिल्प की दृष्टि से प्रभावपूर्ण है। उन्होंने प्रसंगानुकूल भाषा, शैली व संवाद के साथ-साथ वातावरण की सृष्टि भी बडी़ सहजता से की है। कहीं भी उनकी कहानियों में असहजता या अस्वाभाविकता नहीं लगती। शिल्प कला की दृष्टि से उन्होंने पाठकों पर अपना प्रभाव स्थापित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 डॉ. वैकुण्ठनाथ ठाकुर, हिन्दी कहानी का शैली विज्ञान,पृष्ठ 44, 66

2 मालती जोशी, शापित शैशव तथा अन्य कहानियाँ, हिरोइन पृष्ठ 100

3 मालती जोशी, मध्यान्तर-संदर्भहीन, पृष्ठ 52

4. मालती जोशी, मालती जोशी की कहानियाँ, कवच, पृष्ठ 16

5 मालती जोशी, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, प्रतिदान, पृष्ठ 36

6 मालती जोशी, शापित शैशव तथा अन्य कहानियाँ, एक घनीभूत विद्रोह, पृष्ठ 131

7 मालती जोशी, मध्यान्तर-अस्ताचल, पृष्ठ 39

8 मालती जोशी, बोल री कठपुतली, प्रश्नों के भँवर, पृष्ठ 14

9 डॉ. बाबू गुलाबराय, काव्य के रूप, पृष्ठ 223

10 डॉ.जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, कहानी का रचना विधान, पृष्ठ 121

11 मालती जोशी, शापित शैशव तथा अन्य कहानियाँ, शापित शैशव, पृष्ठ 28-29

12 मालती जोशी, शापित शैशव तथा अन्य कहानियाँ, एक क्रांति सीमित-सी, पृष्ठ 105

13 मालती जोशी, मोरी रंग दी चुनरिया, यातना चक्र, पृष्ठ 57

14 डॉ.बाबू गुलाबराय, सिद्धांत और अध्ययन, पृष्ठ 35

15 मालती जोशी, मन ना भये दस बीस, उफान, पृष्ठ 61

16 मालती जोशी, बोल री कठपुतली, पराई बेटी का दर्द, पृष्ठ 60

17 डॉ.जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, कहानी का रचना विधान, पृष्ठ 186

18 मालती जोशी, बोल री कठपुतली, हमको दियो परदेस, पृष्ठ 54

19 मालती जोशी, मन ना भये दस बीस, घर, पृष्ठ 56